Course- M.A.Education

Semester-4th

Paper-401

Topic - NON-EXPERIMENTAL AND EXPERIMENTAL RESEARCH

शोध के प्रकार

Types of research

Types of research	
Non-experimental	Experimental
Historical, Descriptive, Correlational, Qualitative , Expost facto	True experimental, Quasi experimental

अप्रायोगिक शोध

एक अप्रायोगिक शोध वह शोध है जहां स्वतंत्र चरों को प्रकलित नहीं किया जा सकता है। शोधकर्ता का अप्रयोगात्मक शोध अध्ययनों की स्थितियों पर पूर्ण नियंत्रण नहीं होता है। उदाहरण के लिए, यदि आप किशोरों के टेलीविजन देखने के व्यवहार का सर्वेक्षण करना चाहते हैं, तो आप उन्हें एक डायरी बनाने को कहकर ऐसा कर सकते हैं जिसमें वे दर्ज करते हैं कि वे कौन से शो और किसके साथ देखते हैं।

यह वर्णनात्मक अध्ययन उनकी टेलीविजन देखने की आदतों के बारे में जानकारी प्रदान करता है लेकिन वे क्यों देखते हैं, वे क्या करते हैं इसके बारे में कुछ नहीं कहता है। आप किसी भी तरह से उनके टेलीविजन देखने के व्यवहार पर प्रभाव डालने की कोशिश नहीं कर रहे हैं या जांच नहीं कर रहे हैं कि वे कोई विशेष शो क्यों देख सकते हैं।
कोई भी अप्रायोगिक या वर्णनात्मक शोध किसी मौजूदा घटना की विशेषताओं का वर्णन नहीं करता है।

वर्णनात्मक शोध:

वर्णनात्मक शोध वर्णन करता है और साथ ही व्याख्या करता है। यह मौजूदा स्थितियों या संबंधों, प्रचलित अभ्यासों, अभिनिर्धारित विश्वास या दृष्टिकोण, जारी प्रक्रियाओं; प्रभाव जो महसूस किए जा रहे हैं या रुझान जो प्रगति पर हैं, से जुड़ा हुआ है। दृष्टिकोण शोध समस्याओं की विभिन्न विशेषताओं की पहचान करने और आगे के शोध के लिए शोध को हितकर बनाने की ओर निर्देशित है। वर्णनात्मक शोध एक मौजूदा घटना की विशेषताओं का वर्णन करता है। वर्णनात्मक शोध उस घटना की एक विस्तृत तस्वीर प्रदान करता है जिसकी खोज में आपकी रुचि हो सकती है। वर्तमान रोजगार दर, किसी भी देश की जनगणना, श्रमजीवी एकल माता-पिता की संख्या वर्णनात्मक शोध के उदाहरण हैं।
संक्षेप में, वर्णनात्मक शोध हर उस चीज से संबंधित है जिसकी गणना की जा सकती है और अध्ययन किया जा सकता है, जिसका उन लोगों के जीवन पर प्रभाव पड़ता है जिनसे वह संबंधित है।

उदाहरण के लिए,

- बार-बार होने वाली बीमारी का पता लगाना जो एक कस्बे के बच्चों को प्रभावित करती है। शोध के पाठक को ज्ञात हो जाएगा कि उस बीमारी को रोकने के लिए क्या करना चाहिए, इस प्रकार अधिक लोग स्वस्थ जीवन जी पाएंगे।
- 'क्या है' या 'क्या था' जैसे उत्तर दे सकते हैं।
- यह कार्योत्तर, ऐतिहासिक, अन्वेषणात्मक और विश्लेषणात्मक शोध के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है और कभी-कभी इन शब्दों का विनिमेयता के अनुसार उपयोग किया जाता है।

कार्योत्तर (पूर्वव्यापी) शोध:

- सामाजिक विज्ञान और व्यावसायिक संगठन में प्रयुक्त
- किसी घटना के अप्रकलित चर से संबंधित।

कार्योत्तर शोध के गुण

1. कार्योत्तर के तहत जांच के लिए अनुमति कम ही प्राप्त की जाती है क्योंकि डेटा पहले ही एकत्र किया जा चुके है।
2. यह एक अन्वेषी साधन है।

कार्योत्तर शोध के दोष

1. शोध प्रतिदर्शों का गैर-यादृच्छिकीकरण होने के कारण कार्योतर शोध परिणामों के सामान्यीकरण में सीमाएं होती हैं।
2. स्वतंत्र चर नियंत्रण का अभाव है।
3. कार्योतर की लचीली प्रकृति भी एक सीमा के रूप में कार्य करती है।

4. दो कारकों के बीच संबंध कारण और प्रभाव का पता नहीं लगाता है।

ऐतिहासिक शोध:

ऐतिहासिक शोध पूर्व घटनाओं को एक दूसरे से या वर्तमान घटनाओं से संबद्ध करता है। मूल रूप से, ऐतिहासिक शोध (या इतिहासलेखन) इस प्रश्न का उत्तर देता है: अतीत में हुई घटनाओं की प्रकृति क्या है? उदाहरण के लिए, कोई मानसिक बीमारी के उपचार की प्रवृत्ति की जांच करना चाहता है या काम और परिवारों के प्रति दृष्टिकोण कैसे बदल गए हैं। इन सभी प्रश्नों के लिए एक इतिहासकार के खोजी कार्य, प्रासंगिक डेटा ढूंढने तथा एकत्र करने और फिर, किसी भी अन्य शोध प्रयास की तरह, एक परिकल्पना का परीक्षण करने की आवश्यकता होती है।
ऐतिहासिक शोध करने वाले शोधकर्ता प्राय: इस लक्ष्य को प्राथमिक स्रोतों (मूल दस्तावेज या उन लोगों से जानकारी लेना, जिन्होंने व्यक्तिगत रूप से किसी घटना का अनुभव किया है) और द्वितीयक स्रोतों (पूर्व प्रयुक्त दस्तावेज या ऐसे लोगों से जानकारी प्राप्त करना, जिन्हें घटना के बारे में कुछ जानकारी हो सकती है लेकिन उन्होंने पहले इसका अनुभव न किया हो) का उपयोग करके पूरा करते हैं।

- यह वर्णनात्मक शोध का एक अन्य आयाम है और कुछ हद तक कार्योत्तर शोध से संबंधित है।
- पिछली घटनाओं की जांच।
- यह वर्णनात्मक शोध का एक अन्य आयाम है और कुछ हद तक कार्योत्तर शोध के समान है।
- अभिरुचि या समस्या के मुद्दे के ऐतिहासिक पहलू पर ध्यान।
- **उदाहरण भारत में मजदूर संघों की वृद्धि।**

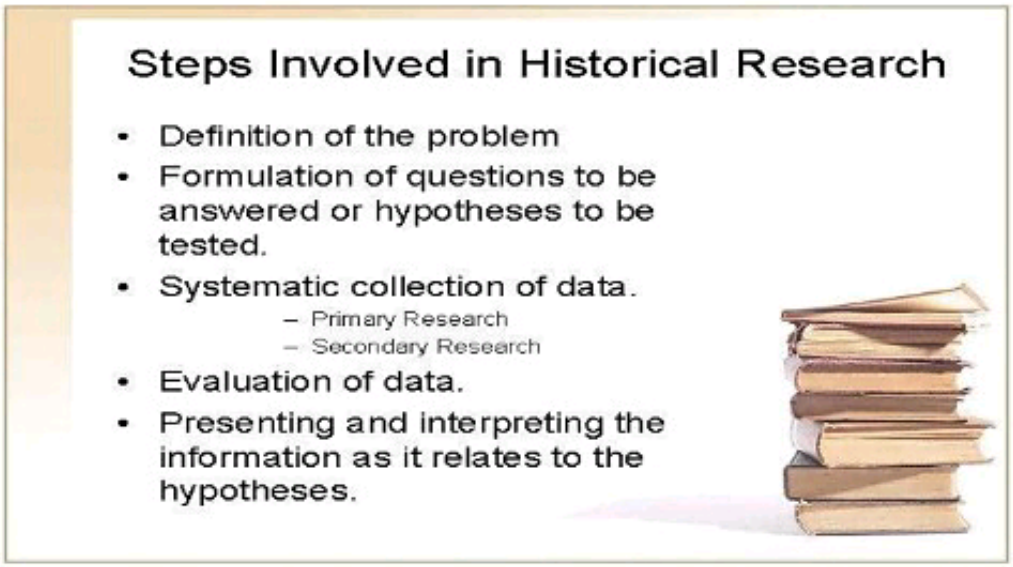

विश्लेषणात्मक शोध

- शोधकर्ता पहले से उपलब्ध तथ्यों और जानकारियों का उपयोग करते हैं।
- यह सामग्री का समीक्षात्मक मूल्यांकन करने का प्रयास करता है।

तुलनात्मक शोध:

- यह शोध समान या भिन्न परिस्थितियों में समानताओं या भिन्नताओं की तुलना से संबंधित है। उदाहरण के लिए, पास के गांव में लोगों की स्वास्थ्य स्थिति का अध्ययन।
- तुलनात्मक डिजाइन में प्राय: एक ही समय में एक या एक से अधिक चरों पर अध्ययन विषयों के दो या दो से अधिक प्रतिदर्शों की तुलना की जाती है। इस डिजाइन का उपयोग चयनित विशेषताओं जैसे ज्ञान स्तर, धारणाओं और दृष्टिकोण; शारीरिक या मनोवैज्ञानिक लक्षण; इत्यादि के आधार पर दो अलग-अलग समूहों की तुलना करने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए, 'जिले में ग्रामीण और शहरी वृद्धजनों के बीच स्वास्थ्य समस्याओं पर एक तुलनात्मक अध्ययन।

अन्वेषणात्मक शोध:

अन्वेषणात्मक शोध को एक ऐसी समस्या की जांच करने के लिए उपयोग किए जाने वाले शोध के रूप में परिभाषित किया गया है जो स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं है। यह मौजूदा समस्या की बेहतर समझ के लिए किया जाता है, लेकिन निर्णायक परिणाम नहीं देगा। इस तरह के शोध आमतौर पर तब किए जाते हैं जब समस्या प्रारंभिक चरण में होती है।

- यह शोध एक ऐसी समस्या के लिए किया जाता है जिसका स्पष्ट रूप से अध्ययन नहीं किया गया हो।
- यह सर्वोत्तम शोध डिजाइन, डेटा संग्रह पद्धति को निर्धारित करने में मदद करता है।
- अन्वेषणात्मक शोध की तकनीक उपलब्ध साहित्य/डेटा की समीक्षा; ग्राहकों, कर्मचारियों, प्रबंधन, प्रतिस्पर्धियों के साथ चर्चा; गहन साक्षात्कार, फोकस ग्रुप, केस स्टडी या प्रायोगिक अध्ययन है।
- इसका उद्देश्य शर्तों को परिभाषित करना, पार्श्व जानकारी हासिल करना, समस्या को स्पष्ट करना, एक परिकल्पना विकसित करना और ऐसी समस्याएं विकसित करना जिनका उत्तर दिया जाए।
- मौजूदा घटना और उससे संबंधित कारकों की पहचान, अन्वेषण, वर्णन करने के लिए एक अन्वेषणात्मक डिजाइन का उपयोग किया जाता है।
- दूसरे शब्दों में, यह किसी घटना के घटित होने का एक साधारण विवरण या बारंबारता ही नहीं, बल्कि इसकी गहन खोज और इसके संबंधित कारकों का अध्ययन है ताकि एक कम समझी जाने वाली घटना की बेहतर समझ प्राप्त की जा सके। उदाहरण के लिए, शहर में चयनित समुदायों में रहने वाले बुजुर्ग लोगों के गिरने और घरेलू सुरक्षा उपायों के बहुआयामी आयामों का आकलन करने के लिए एक अन्वेषणात्मक अध्ययन।

वैचारिक और अनुभवजन्य शोध:

- अवधारणात्मक शोध एक विधि है जिसमें किसी दिए गए विषय पर पहले से मौजूद जानकारी का विश्लेषण और अवलोकन करके शोध किया जाता है।
- यह अमूर्त अवधारणाओं या विचारों से संबंधित है।
- दार्शनिकों ने नए सिद्धांतों को विकसित करने या अलग-अलग दृष्टिकोण में मौजूदा सिद्धांतों की व्याख्या करने के लिए लंबे समय तक वैचारिक शोध का उपयोग किया है।
- वैचारिक शोध किसी अमूर्त सिद्धांत या विचार से संबंधित है। यह आम तौर पर विचारकों और दार्शनिकों द्वारा नई अवधारणाओं को विकसित करने या मौजूदा अवधारणाओं की पुनर्व्याख्या करने के लिए उपयोग किया जाता है।
- **जबकि अनुभवजन्य शोध अनुभव पर निर्भर करता है या इसमें प्राय: बिना प्रणाली और सिद्धांत के केवल अवलोकन होता है।**

मिश्रित शोध:

- मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों शोध अलग नहीं हैं। गुणात्मक शोध एक परिकल्पना पर समाप्त हो सकता है जिसका परीक्षण बाद में मात्रात्मक रूप से किया जा सकता है। मात्रात्मक शोध में गुणात्मक शोध तत्व शामिल हो सकते हैं।
- मात्रात्मक शोध कुछ इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर दे सकता है, जैसे कि भारत में गरीबी की सीमा और प्रतिरूप, लेकिन यह कुछ ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने में दक्ष नहीं हो सकता है, जैसे कि निर्धनता, कठिनाइयों, परिणाम और गरीबी की ओर ले जाने वाली परिस्थितियों का सामना करने का अनुभव क्या है। इसका उत्तर गुणात्मक शोध द्वारा दिया जा सकता है। क्योंकि मात्रात्मक शोध आम तौर पर सर्वविदित है, इसलिए गुणात्मक शोध की आवश्यकता होने पर रूपरेखा देने में यह उपयोगी हो सकता है।

अवधारणा या विचार के आधार पर शोध का वर्गीकरण

1. **वैचारिक शोध:**

वैचारिक शोध का उपयोग आम तौर पर दार्शनिकों और विचारकों द्वारा नई अवधारणाएं विकसित करने या मौजूदा अवधारणाओं की पुनर्व्याख्या करने के लिए किया जाता है। यह किसी अमूर्त विचार या सिद्धांत से संबंधित है।

2. **अनुभवजन्य शोध:**

अनुभवजन्य शोध प्रणाली और सिद्धांत पर उचित ध्यान के बिना केवल अनुभव या अवलोकन पर निर्भर करता है। यह निष्कर्षों के साथ आने वाला डेटा-आधारित शोध है जो अवलोकन या प्रयोग द्वारा सत्यापित किए जाने में सक्षम हैं। इस शोध में, शोधकर्ता को एक कार्यशील परिकल्पना तैयार करनी चाहिए। वह अपनी परिकल्पना को सत्य या असत्य प्रमाणित करने के लिए डेटा एकत्र करता है। शोधकर्ता का तथ्यों पर नियंत्रण होता है।

अनुभवजन्य शोध तब उपयुक्त होता है जब इस बात का प्रमाण मांगा जाता है कि कुछ चर किसी न किसी तरीके से अन्य चर को प्रभावित करते हैं।

प्रतिनिध्यात्मक अध्ययन केवल एक समय में प्रतिदर्श जनसंख्या से इकाइयों को मापते हैं। प्रतिदर्श सर्वेक्षण प्रतिनिध्यात्मक अध्ययन हैं जिनके प्रतिदर्श इस तरह से तैयार किए जाते हैं जैसे कि एक विशिष्ट जनसंख्या का प्रतिनिधि हो। ऑनलाइन सर्वेक्षण शोध का उपयोग प्रतिनिध्यात्मक सर्वेक्षणों के लिए तेज गति से डेटा एकत्र करने हेतु किया जा रहा है।

इस प्रकार प्रतिनिध्यात्मक सर्वेक्षणों की तुलना पैनल सर्वेक्षणों से की जा सकती है, जिसके लिए व्यक्तिगत उत्तरदाताओं का समय के साथ पालन किया जाता है। प्रतिनिध्यात्मक सर्वेक्षण किसी भी तरीके से डेटा संग्रह का उपयोग करके किया जा सकता है, जिसमें टेलीफोन साक्षात्कार, सम्मुख साक्षात्कार और मेल की गई प्रश्नावली शामिल हैं।

अनुदैर्ध्य अध्ययन बार-बार समय के साथ जनसंख्या की प्रतिदर्श इकाइयों को प्राप्त करते हैं। एक विधि यह है कि एक ही प्रतिचयन फ्रेम से अलग-अलग इकाइयां प्राप्त की जाएं। दूसरी विधि "पैनल" का उपयोग करना है जहां समान लोगों को समय-समय पर जवाब देने के लिए कहा जाता है। ऑनलाइन सर्वेक्षण शोध फर्म ऑनलाइन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए पैनल सदस्यों की भर्ती करती हैं।

अनुदैर्ध्य डेटा निम्नलिखित के लिए उपयोग किया जाता है:

- बाजार ट्रैकिंग
- ब्रांड-स्विचिंग
- दृष्टिकोण और छवि की जांच

Cross-Sectional Studies

- Participants of different ages studied at the same time.

Longitudinal Studies

- One group of people studied over a period of time.

कोहॉर्ट (सहगण) शोध:

कोहॉर्ट अध्ययन को एक ऐसे समूह के रूप में परिभाषित किया गया है जो एक चयनित समयावधि में किसी घटना का अनुभव करता है और समयांतराल पर उनका अध्ययन करता है। **कोहॉर्ट (सहगण)** अध्ययन का उपयोग घटनाओं, कारणों और पूर्वानुमान का अध्ययन करने के लिए किया जाता है। क्योंकि वे घटनाओं को कालक्रम में मापते हैं, उनका उपयोग कारण और प्रभाव के बीच अंतर करने के लिए किया जा सकता है।
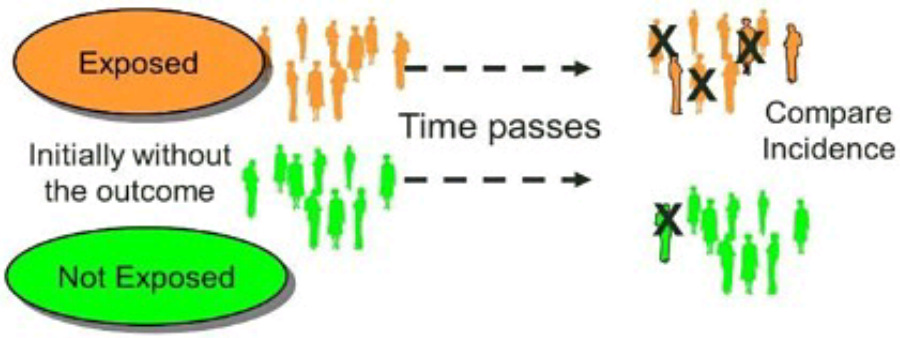
कोहॉर्ट अध्ययन एक प्रकार का अनुदैर्ध्य **अध्ययन** है - एक दृष्टिकोण जो **शोध** प्रतिभागियों का किसी समयावधि (प्राय: कई वर्ष) में अनुसरण करता है। विशेष रूप से, **कोहॉर्ट** अध्ययन उन प्रतिभागियों की भर्ती करता है और अनुसरण करता है जो एक सामान्य विशेषता साझा करते हैं, जैसे कि कोई विशेष पेशा या जनसांख्यिकीय समानता।